e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 09
August 2017

# युग प्रवर्तक निराला जी

**डा0 आशा रानी तदर्थ अध्यापक (Adhoc), हिन्दी विभाग, टीकराम गर्ल्ज कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा।**

साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक है। प्रत्येक युग का समाज, उस युग के साहित्य में प्रतिबिम्बित होता रहा है और होता रहेगा। इसी युग परम्परा में छायावाद युग भी शामिल है और उसके प्रमुख रचनाकारों में या उद्‌घोषक क्रांतिकारी के रूप में निराला जी का नाम लिया जा सकता है।

छायावाद औद्योगिक क्रांति के दौरान या उसके बाद का रचा हुआ साहित्य नहीं है, वह औद्योगिक विकास के लिये प्रयत्नशील है, राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वाले समाज का साहित्य है। छायावाद साम्राज्य विरोधी चेतना के निखार का साहित्य है और छायावाद नये सामन्त विरोधी मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का साहित्य है।''[1] इस प्रकार छायावादी युग में मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल दिया और इस कार्य को करने का श्रेय बहुत कुछ महाकवि निराला को मिलता है। उन्हें हम युग प्रवर्तक, क्रांतिकारी उद्‌घोष कह सकते हैं जो द्विवेदी युगीन साहित्य की इतिवृतात्मकता के प्रतिरोध में ''मैं'' को बल देते हुए भी मानव मूल्यों की, जाति–पांति की एकता की, मानवतावाद की उद्‌घोषणा का शंखनाद करने वाले कवि रहे।

हिन्दी साहित्य में निराला अपने ओजगुण के लिए प्रसिद्ध है। उनके दार्शनिक चिन्तन, साहित्यिक वाद–विवाद और करूणा तथा शोक सभी में उनकी वाणी में एक विशेष उर्जा रहती है। उनके साहित्य में ओजस्विता का यह गुण उनके व्यक्तित्व की ही देन नहीं है, उसका गहरा सम्बन्ध उनके युग से भी है। यूरोप में जहाँ मिल्टन सामंत विरोधी क्रांति के समर्थक रहे उसी तरह निराला भी अपने समय के मानव–मूल्यों के रक्षक के रूप में उभर कर सामने आए। भारतीय साहित्य में तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवि रहे। इसी तरह निरालाजी के समकालीन माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' अपनी अनेक रचनाओं में अपने युग को वाणी देते हैं। निरालाजी पर इन सभी क्रांतिकारी उद्‌घोषकों का प्रभाव रहा, वे प्रारम्भ से ही वीर युवकों की कहानियाँ पढ़ते थे। बगभंग विरोधी स्वदेशी आंदोलन को उन्होंने स्वयं देखा था, इसलिए यदि स्वाधीनता प्रेम और मानव–मूल्य निरालाजी की कविता का विषय बने तो कोई हैरानी नहीं। निराला के चिन्तन की विशेषता यह थी कि ''उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक नीति, उसके राजनीतिक दाँव–पेंच, सांस्कृतिक मामलों में उसके हस्तक्षेप को पहचाना, गहराई से उसका विश्लेषण किया, देश की राजनीतिक

और सांस्कृतिक प्रगति के लिए एक मार्ग निश्चित किया।''[2] साम्राज्यवाद का अर्थ है,– पूंजी की सार्वभौम सत्ता– और यह सत्ता ब्रिटिश पूँजीपतियों के हाथों में समाहित है। निरालाजी ने लिखा है– साम्राज्यवाद इंग्लैण्ड़ की राजनीति का मूल है। ''निरालाजी ने इसी साम्राज्यवादका प्रतिरोध करने की कोशिश अपने लघु उपन्यास चमेली में की। उन्होंने चतुरी के भाई–बंधु को इकटठे हो दिखाया–

'' मन्नी कुम्हार, कुल्ली तेली, भकुआ चमार,
लुच्छु नाई, बली कहार, कुल टूट पड़े,
कुछ नहीं हुआ, कुछ नहीं हुआ, होने लगा।'' (डिप्टी साहब आए)[3]

वास्तव में यह किसान की विजय नहीं हो रही, न ही साम्राज्यवाद का पूर्ण अंत था, अपितु किसानों को संगठित कर उनमें चेतना जाग्रत करने की कोशिश की जा रही थी।

''जीर्ण बाहु है, जीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
से विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मांस ही है आधार,
ऐ जीवन के परवार।'' (बादल राग)[4]

निरालाजी के चिन्तन की विशेषता यह थी कि उनके लिए सामाजिक क्रांति शुरू होती थी, निम्न जातियों के उद्‌घोषक स्वर से और राजनीतिक आन्दोलन की सफलता के लिए वे इस सामाजिक क्रांति को अनिवार्य मानते थे। उनके लिए जाति–प्रथा का विनाश और समानता के आधार पर समाज का पुनर्गठन एक राजनीतिक कर्तव्य था। उसे पूरा किए बिना राष्ट्रीयता का विकास सम्भव नहीं। इसके लिए निरालाजी ने देवी और चतुरी चमार, प्रेमचंद ने गोदान और कफन की रचना की थी। इस साहित्य में भारत की निम्न जातियों का जाग्रत करने का आवाहन समाहित है। निरालाजी समाज में ऊँच–नीच का भेदभाव मिटाने में सबसे आगे रहे उन्होंने कहा–

''तुमसे कुछ न होगा, भारत का उद्धार शूद्र जातियाँ ही करेंगी।'' राग विराग[5]

''दलित जन पर करो करूणा।
दीनता पर उतर आए।
प्रभु, तुम्हारी शक्ति अरूणा।''[6?]

जाति–पाँति का विरोध करते हुए निरालाजी वर्ण व्याख्या का खण्ड़न पुरजोर शब्दों में करते हैं।–

''वर्ण व्याख्या के विरूद्ध निराला का एक तर्क यह था कि पराधीन देश के नागरिकों में न ब्रह्मण होते हैं, न क्षत्रिय, दास होने के कारण वे सब समान रूप से शूद्र हो जाते है।''[7]

समाज में जाति पाति वर्ण व्याख्या के साथ–साथ स्त्री–पुरूष में भी भेद किया जाता है। सामाजिक रूढ़ियाँ जहाँ शुद्रों को दास बनाए हुए थी, वैसे ही वे स्त्रियों की पराधीनता का कारण भी थी। निरालाजी ने स्त्रियों को दासता से मुक्ति दिलाने के लिए उन्हें स्वावलम्बी बनने पर बल दिया। उन्होंने कहा– ''स्वावलम्ब कोई पाप नहीं, प्रत्युत पुण्य है। हमारे देश के लोग इस समय आधे हाथों से काम करते हैं। उनके आधे– हाथ निष्क्रिय हैं। जब स्त्रियों के भी हाथ काम में लग जाएंगे, कार्य की सफलता हमें तभी प्राप्त होगी।''[8]

आर्थिक पराधीनता के कारण ही समाज में दोहरी मानसिकता का जन्म होता है। स्त्रियों के लिए एक कानून है, पुरूषों के लिए दूसरा। निरालाजी की तोड़ती पत्थर कविता में स्त्री की करूणा का चित्रण स्पष्ट है–

''वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर,
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत मन
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार बार प्रहार–––''[9]

शिक्षा के अभाव में भी स्त्रियों की दशा दयनीय रही। सती– प्रथा, बाल– विवाह, पर्दा–प्रथा आदि ऐसी ही कुरीतियाँ थी। निरालाजी ने भी अन्य हिन्दी साहित्यकारों की तरह इनका विरोध किया। निरालाजी स्वामी दयानन्द से बहुत प्रभावित थे क्योंकि उन्होंने स्त्री–शिक्षा–प्रचार पर बल दिया था। स्त्री शिक्षा को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा प्राप्त पुरूषों से वह (स्वामी दयानन्द) बहुत आगे बढ़े हुए है। निरालाजी साहित्य में स्त्रियों द्वारा दिए गए योगदान के भी प्रशंसक रहे। वे नर से नारी को श्रेष्ठ मानते हुए लिखते है–

''माँ अपने आलोक निखारो
नर को नरक–त्रास से वारो।[10]

स्त्री दशा को सुधारने के साथ–साथ निरालाजी ने कर्मकाण्ड़ और धैर्य में भी भेदभाव किया। अन्य समस्याओं की तरह रूढ़ियों और कर्मकाण्ड़ की समस्या भी निराला के लिए सामाजिक और राष्ट्रीय अभ्युत्थान से जुड़ी हुई समस्या थी। सभी राष्ट्र अपनी पुरानी प्रथाओं में

शीघ्रातिशीघ्र परिवर्तन करते जा रहे हैं। भारत की इन राष्ट्रों के कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना होगा। निरालाजी कर्मकाण्ड़ों का, रूढ़ियों का विरोध कर मानव धर्म पर बल देते हैं।

निरालाजी का दृढ़ विश्वास था कि धार्मिक कट्टरता को दूर किए बिना राष्ट्रीय एकता दृढ़ नहीं की जा सकती। इन रूढ़ियों को तोड़ने के लिए ज्ञान का प्रकाश आवश्यक इसीलिए निरालाजी ज्ञान का वरदान सरस्वती देवी से मांगते हैं।

''प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नवभारत में भर दो।''[11]

निरालाजी राष्ट्रीयता एकता की हुंकार भी अपनी रचनाओं के माध्यम से करते हैं। उनकी 'राम की शक्ति पूजा' के राम केवल ईश्वर नहीं है, वे पूरी मानव–जाति का नेतृत्व करने वाले पुरूषोत्तम हैं।

''होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन कह महाशक्ति राम के वन्दन में हुई लीन।''[12]

किसानों, स्त्रियों, रूढ़ियों पर प्रहार जाति–पाति भेदभाव आदि सभी पर प्रहार करते हुए अन्त में निरालाजी राष्ट्रीय एकता के सभी का आहवान करते हुए अपनी कविता में उद्घोषक स्वर में कह उठते हैं।–

''सवा–सवा लाख पर एक को चढ़ाउंगा, गोविन्द सिंह निज नाम जब कहाऊंगा।''[13]

इस प्रकार अपने पूर्वजों की स्वतन्त्र हुंकार में कवि ने स्वतन्त्रता का भाव प्रकट किया है अन्यत्र भी सुप्त भारतीयों को जाग्रत करते हुए कह उठते हैः–

''जागो फिर एक बार।
प्यारे जागते हुए हारे सब तारे तु
अरूण–पंख तरूण–किरण
खड़ी खोलती है द्वार–
जागो फिर एक बार।''[14]

इस तरह जीवन पर्यन्त निरालाजी देश की स्वाधीनता और सामाजिक चेतना का उद्घोष करते रहे। जिस कविता में वह संसार से विदा लेते हैं, उनमें उनकी अंतिम आकांक्षा ब्रह्म में लीन होने की नहीं फिर से नया जीवन आरम्भ करने की है। निराला के मुक्तिगाानों में स्वतंत्रता का सामाजिक चेतना का जो प्रकट स्वर सुनाई देता है उसके आधार पर उन्हें सही शब्दों में युगचेता कह सकते हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 09
August 2017

1. निराला की साहित्य साधना भाग–3– डा0 रामविलास शर्मा–पृ0 16
2. निराला की साहित्य साधना भाग–2– डा0 रामविलास शर्मा–पृ0 36
3. निराला की साहित्य साधना भाग–2– डा0 रामविलास शर्मा–पृ0 15
4. बादल– राग– निराला पृ0 18
5. राग –विराग–निराला पृ0 131
6. राग –विराग–निराला पृ0 131
7. निराला की साहित्य साधना भाग–2– डा0 रामविलास शर्मा–पृ0 32
8. निराला की साहित्य साधना भाग–2– डा0 रामविलास शर्मा–पृ0 32
9. राग –विराग–निराला पृ0 119
10. राग –विराग–निराला पृ0 181
11. राग –विराग–निराला पृ0 181
12. राग –विराग–निराला पृ0 104
13. राग –विराग–निराला पृ0 106
14. राग –विराग–निराला पृ0 14